INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

अनामिका के काव्य में अंकित नारी – चेतना के विविध आयाम
(Woman inscribed in Anamika's Poetry - Various Dimensions of Consciousness)

प्रा. मनिषा रामचंद्र गाडीलकर
सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
श्री मुलिकादेवी महाविद्यालय, निघोज,
ता. पारनेर, जि. अहमदनगर

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/05.2022-73786178/IRJHIS2205023

प्रस्तावना :

हिंदी कविता ज्ञानवर्धक होने के साथ–साथ जीवन से संपन्न है। हिंदी के अनेक कवियों ने नारी चेतना के कार्य में महत्वपूर्ण योगदान किया है। हिंदी कविता नदी का एक प्रवाह है, जो समय–समय पर मोड लेकर अपना रुप बदलकर चलती रहती है। और इस नदी के प्रवाह में होनेवाला परिवर्तन यह समय की मॉग रही है।

नारी के कई रुप है, ''वह एक स्नेहमयी मॉ है, पत्नी, कठिनाइयों से संघर्ष करती स्त्री है, आनेवाले दिनों के प्रति उत्सुकता की नजरो सें देखनेवाली एक आशावादी लडकी भी है, इसके अलावा वह एक प्रेमिका और वेश्या भी है। लेकिन फिर भी वह स्वतंत्र नहीं है –''बचपन में पति की और बुढापे में बेटों की अधिनता में उसे रहना पडता है।''प्रस्तुत विवेचन को दो भागो में विभाजित किया जा सकता है जिसमे है – १) परंपरागत नारी २) सबला नारी अनामिका जी ने स्त्री के इसी विभिन्न रुपों को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है।जैसे :– हम देखते है कि संयुक्त परिवार में मुखिया का निर्णय ही सर्वोपरि होता है। जाहिर है, मुखिया का पद पुरुष को ही मिलता है। ऐंसे परिवारों मे स्त्री की स्थिती किस तरह की होती है। इससे हम सब परिचित है।

नारी चेतना के विविध आयामों (रुपों) को हम निम्न रुप में देखते है–

अनामिका ने अपने काव्य में परंपरागत नारी के अन्य रुपों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है।अनामिका जी ने अपने साहित्य में पुरुषवादी समाज में लडकी अपने आपको अकेला महसूस करनेवाली लडकियों, स्त्रियों का वर्णन अपनी कविताओं में किया है।अनामिका जी ने लडकियों के मन के डर का चित्रण अपनी एक कविता 'बेजगह' में किया है।

''अहा, नया घर है
श्राम, देख यह तेरा कमरा है!
और मेरा?
ओ पगली
लडकियॉ हवा, धूप, मिटट्ी होती है।''[१]

इन पंक्तियों में वे लडकियॉ आती है जिन्हें अपने घर परिवार समाज में कोई स्थान, सम्मान नहीं मिलता। लडके की पढने खाने, सोने की सुविधा दी जाती है, लेकिन लडकियॉ हवा, धूप, मिटट्री होती है, उनका कोई घर नहीं होता।स्त्री, विमर्श को लेकर कई जगह पर संगोल्ज्यॉ ली जाती है। लेकिन असल में इन संगोल्ज्यों का क्या मकसद है? इसका पता आज भी हमें नहीं है। स्त्री–पुरुष के बराबर खडा होना चाहती है, लेकिन इसके लिए समाज तथा व्यक्तियों के विचारों में बदलाव लाना बहुत जरुरी है।

अनामिका जी ने अपनी कविता ''चौदह बरस की कुछ सेक्स वर्कर्स'' में ऐसी स्त्रियों का चित्रण करती है। जो कई परेशानियों के बावजूद भी हॅसती हुई दिखती है। वह कहती है कि उनकी यह हॅसी जमाने का ड्रेसकोड है –

''नए जमाने का घूॅघट हॅसी ही है
सब औरतों के मुॅह पर यह पडी है,
एक नये ड्रेसकोड की तरह।''[२]

स्त्री के प्रति समाज का नजरिया कभी बदलता नहीं है, इसलिए स्त्री की स्थिति भी बदल नहीं रही है। कहानी जरुर बदलती है, लेकिन विषय वही है। समस्या को सुलझाने की जो शक्ति जो स्त्री में होती है, शायद उसकी तुलना पुरुष में कम दिखाई पडती है।अनामिका जी अपनी ''स्त्रियॉ'' कविता के माध्यम से पुरुषसत्ता की दिखावट का खुलासा करती है। उसमें हमारे सामने ईमानदार दिखनेवाले सभी पुरुष आते हैं –

''सुना गया हमको
यों ही उडते मन से
जैसे सुने जातें हों फिल्मी गाने
सस्ते कैंसटो पर।''[३]

अर्थात, इस पुरुष वर्चस्व वाले समाज में स्त्रियों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, उसे हमेशा उपेक्षा और निंदा ही सेलनी पडी है। हमारे समाज में लडकों के लिए इक्कीस वर्ष और लडकियों के लिए अठारह वर्ष शादी करने की उम्र है। विवाह की उम्र और उनके संरक्षण के लिए हमारे देश में कानून हैं। लेकिन विवाह अनिवार्य है– ऐसा कोई कानून नहीं है। अपना जीवन अपनी इच्छा के अनुसार जीने की आजादी सबको होनी चाहिए। व्यक्ति की पारिवारिक, प्राकृतिक, सामाजिक जरुरतों की पूर्ति के लिए शादी की जानी जाहिए। लेकिन आज की लडकियॉ शादी से डर रही है। लडकियों का यह डर हमारे पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण समझ सकते है। लेकिन आज के युवाओं का शादी के लिए डरना यह आज की आधुनिक समस्या के रुप में हमारे सामने आती है। जीवन के किसी बडे उददेश्य के लिए शादी जिम्मेदारीयों से मॅह मोडना तो चल सकता है, लेकिन वैवाहिक जिम्मेदारियों से मुॅह मोडकर कैसे चल सकता है, इसीलिए इसे रोकना होगा। और युवाओं को अपनी जिम्मेदारी का एहसास कराना चाहिए।पत्नी पति को परमेश्वर मानकर उसके ताने, मारपीठ सह लेती है। और कभी–कभार उसका विरोध कर घर से बाहेर भी निकल पडती है, लेकिन फिर बडा सवाल खडा होता है कि कहॉ जाए? लेकिन फिर भी पति को यह विश्वास रहता है कि वह यहीं वापस आएगी नही तो कहॉ जाएगी? अनामिका ने ऐसी ही एक पत्नी का वर्णन अपनी 'अभ्यागत' कविता में किया है।

''रोज निकाला जाता है मुझको
श्रोज केंचुए की तरह गुडी–मुडी हो
फैल जाती हूॅ फिर से! ।''[४]

अर्थात, पत्नी को घर से बाहर कर देना इतना आसान और अमानवीय काम हैं, कहीं पत्नी भी उसे सही मानती है, अगर पत्नी से छोटी भी गलती होती है तो पतिदेव उसे बर्दाश्त नहीं करता, लेकिन इसमें गलती सिर्फ पुरुष की नहीं, स्त्री की भी है। क्योंकि वह अन्याय को चूपचाप सहती है, इसी कारण उसपर अन्याय किया जाता है।अत:''अन्याय करनेवाले से भी अन्याय सहनेवाला अधिक गुन्हेगार होता है।''

अनामिका जी घर और हिंसा को एक दूसरे के प्रतिपक्ष मानती है। वे कहती है, घर हमें बाहरी आक्रमणों से बचने के लिए है। मगर हम कभी यह देखते हैं क्या घर के अंदर जो यौन हिंसा, साधारण मार–पीट गाली–गलोज को हम नहीं देखते। घर में पति के आने पर तब तक की शॉति, आराम और तसल्ली खत्म होती है। पुरुष सोचता है कि जब वह सुबह काम पर जाता है, तब से लेकर शाम तक पत्नी को कोई काम नहीं रहता, लेकिन यह तो वही गृहणियों को पता है, घर का काम कितना कठिन है। इन सभी कामों के बावजुद भी पति द्वारा प्रताडित, पीडित पत्नियों का चित्रण अनामिका जी ने अपने 'पतिव्रता' कविता में इस तरह किया है।

''घर में घुसते ही
जोर से दहाडते थे मालिक।''[५]

अर्थात पति का इतना डर पत्नी के मन में बैठा हुआ था, कि वह सहमी सी गई है।समाज में विवाह, दहेज प्रथा, एवं विवाह संबंधो में कटट्रता जैसी रुढियों के साथ–साथ पारिवारिक स्थितियों मे भी अभूतपूर्व परिवर्तन दिखाई देता है। आज हम देखते है औरतों को ५० प्रतिशत आरक्षण मिला है, लडकियॉ – लडकों के कंधो–से कंधा मिलाकर काम करती दिखाई देती है। आज देश के हर एक क्षेत्र में स्त्रियों ने अग्रगण्य स्थान प्राप्त किया है।

अनामिका जी ने अपनी कवितायों के माध्यम से आज के नारी के सोच में बदलाव लाया है, तथा अन्याय के प्रति विरोध, विद्रोह करने की प्रेरणा दी है। वे कहती है, ''अन्याय करनेवाले से ज्यादा अन्याय सहनेवाला अधिक गुन्हेगार होता है, इसीलिए अन्याय सहने के अलावा उसका डटकर प्रतिकार करो'' और यही नारी चेतना है।पुरुष सत्ता के खिलाफ आक्रोश और विद्रोह करने की इच्छा स्त्रियों में होती है, लेकिन वे उसे बाहर प्रकट नहीं करती अंदर ही अंदर वह सोचती रहती है।हमारे यहॉ परंपरा से ''लडकी पराया धन होता है, तुम चार दिन की मेहमान हो।'' यह घर से ही सुनाया जाता है। लेकिन आज इस सोच में बदलाव आता हुआ दिखाई देता है, आज मॉ–बाप अपनी बेटियॉ को पढा–लिखाकर सक्षम बना रहे है। बेटी को घर–परिवार की लक्ष्मी माना जाता है।नारी पर्यावरण की स्थिति को बिगाडने का काम दहेज प्रथा एवं पुरुषवादी मानसिकता ने किया है। अपने साहित्य में पुरुषी मानसिकता का विरोध कर उसमें बदलाव लाने का प्रयास अनामिका जी किया है। अन्याय का डरकर सामना करने की प्रेरणा दी है। अनामिका ने अपने साहित्य के माध्यम से पुरुषवादी मानसिकता को बदलने का काम किया है।

नारी की यौन सुचिता को लेकर तरह–तरह के सवाल पुरुष सत्तात्मक परिवार में प्राचीन काल से उठाए जा रहे हैं। हालाकि देव संस्कृति भले ही पवित्र मानी जाती रही हो, परंतु जैसे ही नारियों की बात बाती थी, उनका रवैया सामंती हो जाता है। सामान्यता: नारी एक पुरुष से प्रेम करे। जबकि पुरुष कई नारियों से प्रेम कर सकता है, और इसी तरह के विचारों को बदलने में नारी चेतना सफल हो जाए तो सही अर्थ में सामाजिक एवं पारिवारिक परिवर्तन हो सकता है, और इसी तरह के रवैय्ये को अनामिका जी ने अपनी 'पतिव्रता' कविता के माध्यम से चित्रीत किया है–

''जैसे कि अंग्रेजी राज में सूरज नहीं डूबता था
उनके घर में भी लगातार।''[६]

अर्थात तमाम विसंगतियों के बावजुद भी सती ने अगले जनम में पार्वती बनकर शंकर का ही वरण किया। सती, पार्वती, सीता, अनुसया, की दास्तान की तरह वैश्वीकरण की नारीयॉ भी पतियों का बडा ध्यान रखती हैं, फिर भी उनकी स्थिति में बदलाव क्यों नहीं आ रहा है। लेकिन रत्नावली की तरह स्त्रियों ने भी अपनी पति, परिवार के विरोध में, अन्याय के खिलाफ खडा होना चाहिए ।

स्त्री जीवन की विडंबनाएँ अनामिका की कविताओं में मुख्य रुप से अभिव्यक्त हुई है। किंतु इसी के साथ नारी–मुक्ति छटपटाहट, नारी चेतना पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है। 'तुलसी का झोला' कविता में रत्नावली की पीडा को व्यक्त करते हुए संपुर्ण पुरुष जाति को कटघरे में खडा करती है। राम रतन पा लेनेवाले तुलसी से रत्नावली सीधा सवाल करती है कि ''घन–घमंड वाली चौपाई लिखते हुए क्या उसकी याद आई थी?''अर्थात अनामिका की कविता में रत्नावली जैसी स्त्रियों का संघर्षरत प्रयास का चित्रण करते हुए हालातों से जुझती हुई नारी को भी उजागर किया है।

समाहार :

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि, हम कह सकते है कि अनामिका जी कविताओं की परंपरागत नारीयों के रुढि, परंपरा, बंधनों को तोडने का काम इन्हीं की कविताओं की आधुनिक नारियों ने किया है। उनकी कविताओं की कई नारीयॉ अपने हक के लिए लडती दिखाई दे रही है। नारी अपने उपर हो रहे अन्याय के खिलाफ विद्रोह करती हुई दिखाई दे रही है। लडकियों के प्रति मॉ–बाप के मन में बैठा हुआ डर कम होता नजर आ रहा है, उनकी सोच में बदलाव दिखाई दे रहा है। स्त्री अपनी अस्तित्व और अस्मिता की पहचान करने के लिए झूंज रही है, वह अपनी पती के पुरुषी मानसिकता में बदलाव लाने का प्रयास करती हुई दिखाई दे रही है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. बेजगह. अनामिका ;खुरदुरी हथेलियॉ) पृ. १५

२. चौदह बरस की कुछ सेक्स वर्कर्स. अनामिका (दूब – धान) पृ. ६९

३. स्त्रियॉ अनामिका.; खुरदुरी हथेलियॉ) पृ. १३

४. अभ्यासगत. अनामिका (दूब – धान) पृ. ५३–५४

५. पतिव्रता. अनामिका (खुरदुरी हथेलियॉ) पृ. २७

६. पतिव्रता. अनामिका (खुरदुरी हथेलियॉ) पृ. २७